लेखक परिचय

मनीषा कुलश्रेष्ठ का जन्म 26 अगस्त, 1967 को जोधपुर, राजस्थान में हुआ है। वज्ञान से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद इन्होंने स्नातकोत्तर और एम. फल हिन्दी साहित्य से कया। इनके लखे कहानी संग्रह 'कठपुत लयां', 'कुछ भी तो रूमानी नहीं', 'बौनी होती परछाई', 'केयर ऑफ स्वात घाटी' बहु प्र सद्ध हैं। कश्मीर के हालात पर लखी गई मनीषा कुलश्रेष्ठ की उपन्यास ' शग़ाफ' एक उल्लेखनीय रचना है। इसके अलावा इन्होंने 'शालभंजिका' नाम से भी एक नोवेल लखा है। अंग्रेज़ी साहित्य के अनुवाद के अलावा इन्होंने संस्मरण 'बहुरु पया' और 'कार गल वजय दिवस के उपलक्ष्य में' को भी अपने शब्दों से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कया है।

शब्दार्थ

खुल्लम-खुल्ला- बिना लाज शर्म के।
फेडेड- रंग उड़ा हुआ।
वेस्टर्न कल्चर- पाश्चात्य संस्कृति।
गंतव्य- पहुंचने की जगह।

सारांश

मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा र चत बिगड़ैल बच्चे आधुनिक समाज की वास्त वकता की पहचान है। प्रस्तुत गद्य में ले खका तीन युवाओं के माध्यम से आधुनिक युवा पीढ़ी की सच्चाई एवं उनकी लापरवाही की पहचान दिलवाई है। 'बिगड़ैल बच्चे' कहानी मनीषा कुलश्रेष्ठ के कहानी संग्रह कठपुत लयां से उद्धृत है।
कहानी की शुरुआत ट्रेन की यात्रा से होता है।
ले खका स्वयं कथाकार के रूप में प्रस्तुत कहानी में निरू पत करती हुई कहती है- "रेल के सबसे पीछे वाले सुनसान पड़े डब्बे की मानो रुकी हुई सांसे एकाएक चल पड़ी हो....। "आशय यह है क रेल के सबसे पीछे के डब्बे जहां ले खका स्वयं सवार होकर यात्री के रूप में परिणत है, शांत डब्बे में तीनों युवाओं के आने से चहल-पहल हो जाती है। उनके चाल- चलन में एक लापरवाही की झलक स्पष्ट परिल क्षत होती है।
ले खका को उसका बेटा सुबह पांच बजे ट्रेन में बैठा कर चला जाता है, बोगी के उस एकांत अवस्था में बोगी में प्रत्येक आने जाने वाले प्रत्येक यात्रियों का पूर्ण निरीक्षण ले खका करती है। स्वभावतः अनुमानित तौर पर ले खका ने तीनों युवाओं की पहचान कर दी थी। तीनों युवा अपनी चाल- चलन, वेश- भूषा से गोवा के प्रतीत हो रहे थे।
अपने निरीक्षण के इस कल्पना से ले खका ने तीनों के वषय में अनेकों कल्पना एवं अनुमान लगाए थे। जैसे वे कहा जा रहे हैं; तीनों में क्या संबंध है, इत्यादि। व्यस्क ले खका को मनचले तीन युवाओं के वेश- भूषा, चाल चलन, भाषा अतरंगी महसूस हो रही थी।लड़की का बालों को रंगना, छोटे लड़के का वॉकमैन में जोर से गाना सुनना, बड़े लड़के का गटार समेत गुनगुनाना, बड़े लड़के का प्रेम भरी भरी नजरों से अपनी प्रे मका लीजा को देखना ले खका को अत्यंत अरु चकर प्रतीत हो रहा था। साथ ही साथ तीनों युवाओं का लापरवाही एवं लड़की का कपड़ा जिसके कारण खड़की के पास मनचले लोगों का खड़ा होना, ले खका के लए क्रोध का वषय एवं असंतोष का फल पैदा कर रही थी। लड़की के वेश- भूषा के कारण मनचले सड़क छाप लोगों का खड़की के पास रुकना लड़की को असहज महसूस हो रहा था। बड़े लड़के ने इस समय बुद् ध से काम लेते हुए लड़की को लंबी बाह की टी शर्ट पहनने को दी और स्वयं वह खड़की के समक्ष बैठकर लड़की को बीच में बिठा दिया।
छोटे लड़के का वॉकमैन पर अ धक आवाज से गाने सुनने पर ले खका के साथ सवार हुए अधेड़ व्यक्ति जो पेशे से डॉक्टर था और उसकी पत्नी जो क अध्या पका थ। उन्होंने उस पर आप त्तजनक प्रति क्रया प्रद र्शत की। उनकी वाणी के प्रदर्शन का छोटे लड़के पर कोई असर नहीं पड़ा, जिसके कारण ले खका ने उसके बात को फर से सरल शब्दों में दोहराई, जिससे क छोटे लड़के का बारमुंडा नीचे खसक गया।
ले खका इन उच्छृं खलताओं को देखते हुए अपने पारिवारिक वातावरण से उसकी तुलना करने लगी। जिससे आधुनिक युग में माता- पता द्वारा बच्चों को संस्कार देने का समय, युवकों के संस्कार आदि को ले खका वचारने लगती है- "हमारी भी गलती है..... हमारे पास समय कहां है जो इन्हें संस्कारों के पाठ पढ़ाएं।"
युवाओं के वषय में सोचते- सोचते अपने कठोर अनुशासन, कठोर संस्कार से वशीभूत बच्चों के बारे में वह सोचती है, जहां पर उसका बेटा तो दिल्ली में आई.आई.टी कर रहा है ले कन जो बेटी है (नि श) उसकी जल्दी ही शादी करवा दी जाती है और अपने मायके में आने के लए भी उसे चंद लोगों का मोहताज बन कर रह जाना पड़ता है और इसी सोच में डूबी ले खका के ममतामई हृदय से उद्वे लत हो जाती है। और लड़की की लापरवाही एवं वेशभूषा

को देखकर, उसका खतरे को निमंत्रण करने की इस व्यवहार से अपने अनुशासन शक्षा एवं स्वतंत्र शक्षा के इस द्वंद्व में फंस जाती है। इन सारे असमंजस वचार के पश्चात उन तीनों युवाओं के साथ ले खका (मनीषा कुलश्रेष्ठ) जी का थोड़ा तादात्मय बढ़ जाता है। ले कन उन अ धक सज्जनों के साथ उनका तादात्मय अ धक रहता है। इस बीच अलवर स्टेशन आता है, जहां से ले खका को मठाई (मल्क केक) खरीदने के लए वह उतरती है। ट्रेन की सीटी बजने के कारण एवं ठीक समय पर ना उठने के कारण वह स्टेशन के भीड़ में फंसती हुई स्टेशन पर ही गरकर बेहोश हो जाती है। होश में आने के पश्चात ले खका अपने को रिटायर रूम में पाती है। डॉक्टर का कहना क इन तीनों नौजवानों ने ही उन्हें सुर क्षत कया है; ले खका हतप्रभ हो जाती है और उसका हृदय भाव वभोर हो जाता है। अपनी एवं अपने कपड़ों की, अपनी वेशभूषा की परवाह कए बिना, अपने ट्रेन की परवाह कए बिना उन तीनों बिगडैल बच्चों ने ले खका की मदद की। ले कन तथाक थत सभ्य मनुष्य (अधेड़ सज्जनों) ने ले खका की मदद नहीं की। बिगडैल बच्चों की मन:स्थिति उनके व्यवहार तथा उनके व्यापार से अ धक गंभीर और उत्कृष्ट थी। भाषा एवं वेशभूषा से बिगड़ैल बच्चे सांस्कृतिक तौर पर उच्चता को दर्शा रहे थे। ले खका स्वयं को उन तीनों युवाओं के स्थान पर रखकर सोचती है क अगर उनके साथ या हादसा हुआ होता तो क्या वह सच्चे मनुष्य के रूप में उभरती या नहीं।
अंत में डॉ. रशीद ने तीनों बच्चों एवं ले खका के लए अपने घर से बिरयानी लेकर उनके लंच के लए उनके साथ भेज दिया और साथ ही साथ वहां के स्टेशन मास्टर ने भी उन्हें ए.सी. का कंपार्टमेंट रिजर्व करवा दिया।
अत: वही तीन युवा समाज के लए बिगडैल बच्चे थे परंतु असहायों के लए मसीहा बनकर सच्चे नागरिक या मनुष्य के रूप में स्था पत होते है।

<u>प्रश्नोंत्तर</u>

१) "हमारी भी गलती है..... हमारे पास समय कहां है, जो इन्हें संस्कारों का पाठ पढ़ाएं।"
क) कसका कथन है?
ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय क्या है?

उ: क) प्रस्तुत पंक्ति ले खका का कथन है।
ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है क आज अर्थात आधुनिक युग के माता- पता अपने कामों में, अपने बच्चों के भ वष्य को बनाने में बहुत व्यस्त हैं और उनके संस्कारों को गठित करने, उनके साथ समय बिताने के लए उनके पास समय नहीं है जिसके कारण बच्चे एकांत जीवन भोगते हैं और बिगड़ैल बच्चे के रूप में परिणत हो जाते हैं।

२) "बात एक जाति की नहीं है, हमारी यंग जनरेशन पूरी की पूरी ही ऐसी है। कुछ वेस्टर्न कल्चर का असर था, बचा- खुचा टी.वी. चैनलों ने पूरा कर दिया। इन लोगों को इतनी छूट है, हमें कभी थी क्या?"
क) प्रस्तुत कथन कसका है?
ख) प्रस्तुत कथन के माध्यम से कस यथार्थ का परिलक्षण कया जा रहा है?

उ: क) प्रस्तुत कथन डॉक्टर का है।
ख) प्र सद्ध कथन को आधुनिक युग की वडंबना को दिखाया गया है जहां पर बच्चे संपूर्ण रूप से पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख होते जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति, अपनी संस्कृति, अपने गौरव की अवहेलना करते हुए नगण्य पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे है। भारतीय मान- सम्मान, बड़ों के प्रति आदर- भाव, भारतीय गौरव को आधुनिक बच्चे तिलांज ल देकर पाश्चात्य संस्कृति के नग्नता में अपने को वशीभूत करते जा रहे हैं। इस संपूर्ण अवनति को टी.वी. चैनलों ने अत्यंत बढ़ावा दिया है। 21वीं सदी के बच्चों को हर कार्य के लए जितनी स्वाधीनता प्राप्त होता है उतना अन्यत्र कसी और पीढ़ी को नहीं। इसी के कारण यह अवनति, अधोगति अत्य धक मात्रा में बढ़ चुका है और समाज को खोखली करती जा रही है।

Teacher's Name- Riya Saha